धर्म जीवन

सितम्बर 2006

- क्या प्रमोद महाजन बच सकते थे?
- सत्य धर्म बोध उत्सव से पहले सत्संग
- सत्य धर्म बोध उत्सव
- गम्भीर होती शोर प्रदूषण की समस्या
- दुश्मन को प्यार करके परास्त करें
- शाकाहारी क्या करें
- चमत्कारों का अन्ध विश्वास
- शुभ संग्राम

शुभ संग्राम

9अगस्त शाम 5 बजे से श्रीमान बलदेव सिंह जी यहां पहुंचे। मास्टर अवतार सिंह जी के घर सभा करवाई। उनके परिवार के 2 और जन भी शामिल हुए। सभा में बताया गया कि मनुष्य को बाहर का बहुत ज्ञान है, परन्तु अपने आपका ज्ञान नहीं है। उसको अपने चालक भावों का पता नहीं। सारे दुख और कष्ट इसी अज्ञान के कारण हैं। देवात्मा द्वारा पैदा हुई संगत इस पीड़ा का ज्ञान देती है। अपना ज्ञान पाए बिना दुख और हानियां होती है।

कल्याण :- 10 अगस्त शाम को श्रीमान जी मोगा से यहां पहुंचे रात को एक सभा रखी गई। इस सभा में भी अपनी हस्ती का ज्ञान पाने और संगत की अवश्कता पर ध्यान फेरा गया। यह बताने का संग्राम किया कि देवात्मा के दर के बिना कहीं ठिकाना नहीं, कहीं भी अपने आपको दिखाने का काम नहीं होता। अपने नुक्स, अपनी नीचता वा हीनता न दिखती है और न उससे निकलने की प्रेरणा मिलती है। सभापति जी ने इस दर पर आने के अपने लाभ बताए, न आते तो कितनी हानि और बर्बादी होती।

11 तारीख सुबह की सभा में बताया गया कि समाज के न फैलने का कारण हमारे नीच जीवन हैं। हमारे अच्छे जीवन की महक फैलनी चाहिए जैसे जगीर सिंह जी की सेवा की धाक मलेरकोटला से 20-25 किलोमीटर तक फैली हुई थी। इसी प्रकार हमारी जिन्दगी चमकनी चाहिए। जागीर सिंह जी ने दूर दूर तक लोगों के लाए पशुओं की सेवा की। सेवकों में ईमानदारी नहीं है, पवित्रता, दीनता का होना आवश्यक है। ईमानदारी के सुन्दर उदाहरण दिए गए। किस प्रकार जनरल करियापा सरकारी गाड़ी को अपने निजी काम के लिए कभी प्रयोग में नहीं लाते थे। सरकारी दफ्तरों के काग़ज, पैन्सल तक न प्रयोग करने के उदाहरण हैं। गुरु महाराज ने सरदार सावन सिंह जी को फरिश्ता बना दिया। भाई अवतार सिंह जी को विशेष हस्ती बना दिया। उनकी ईमानदारी की चमक दूर दूर तक थी। उनको देखकर लोग समाज की ओर आकर्षित होते हैं। गुरु की शक्ति से हमारा जीवन भी ऐसा होना चाहिए। नहीं तो हम देव समाजी नहीं, दा, समाजी हैं। यह सभा बहुत प्रभाव शाली थी।

चण्डीगढ़ में भी ईतवार के साधन नियमित रूप से होते रहे। सत्य धर्म बोध उत्सव की तैयारियों और हिन्दी, पंजाबी की पत्रिकाओं को छपवाने का संग्राम किया गया।

एक सेवक

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 9
सितम्बर 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

क्या प्रमोद महाजन बच सकते थे?

भारत के राजनैतिक आकाश पर चमकने वाले सितारे, भी प्रमोद महाजन की अचानक मौत ने सारे देश के भीतर सन्नाटा पैदा कर दिया था। कुछ समय पहले भारत के अन्दर ऐसी दुर्घटना हुई कि भूतपूर्व मन्त्री श्री प्रमोद महाजन को उनके ही सगे छोटे भाई ने, सुबह सुबह उनके घर के अन्दर आकर दनादन गोलीयां मारकर मिन्टों में हलाक कर दिया, जब वह अपने घर में बैठे समाचार पत्र पढ़ रहे थे।

इस दुखांत घटना के साथ प्रत्येक नेक दिल भारतवासी, चाहे उसका सम्बन्ध किसी भी पार्टी से हो, हैरानी और शोक से भर गया था। यह कभी सोचा भी नहीं था कि उनका ही अपना छोटा भाई इस प्रकार उन पर गोलियां दाग सकता है। आन की आन में एक बहुत ही कीमती हस्ती मिट्टी में मिल गई। एक पूर्णत बेकसूर उनकी पत्नी विधवा हो गई। बच्चे यतीम हो गए। एक राजनैतिक पार्टी का विशेष सहारा लोप हो गया। सब बेबसी के आलम में डूब गए।

प्रत्येक नेक दिल यह सोचने के लिए मजबूर होता है कि काश! यह दुखांत न होता। यह अनहोनी न होती, परिवार और भारत का एक हीरा इस प्रकार , खाक में न मिलता।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या प्रमोद महाजन किसी सूरत में बच भी सकते थे। क्या उनका गुस्से में पागल भाई अपना गोलियों से भरा हुआ रिवालवर फेंक सकता था और कातिल बनने से बच सकता था?

इस सोच के साथ एक और प्रश्न भी उठता हैं कि क्या कभी पहले भी ऐसी घटना हुई है कि अपने सगे सम्बन्धी को मारने पर तुला हुआ कोई सम्बन्धी अपने हथियार फैंकने के लिए तैयार हुआ है और कातिल होता होता कातिल होने से बचा है?

इसके उत्तर में हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि एक नहीं अनेक कातिल बनने का पक्का इरादा धारण करने वाले मनुष्य अचानक बदले हैं और वह कातिल बनने से बचे हैं। यदि वह बच सके हैं तो निश्चित रूप से प्रमोद महाजन भी बच सकते थे।

यदि महराज गांव का एक नौजवान अपना भरा हुआ रिवालवर लेकर कई दिन इस ताक में रहता था कि कहीं उसको उसका पिता अकेला मिल जाए तो वह उसको खत्म कर सके, परन्तु कैसे वह अपना

रिवालवर कुएं में फैकने के लिए मजबूर हो सकता है और कातिल बनने से बच सकता है तो प्रमोद महाजन की जान भी पक्का बच सकती थी।

यदि बनी गांव का रहने वाला प्रेम अपने चाचा का खून करने से बच सकता है तो प्रमोद महाजन भी बच सकता था।

यदि कल्याण गांव के फौजी सरवन सिंह जी अपने सगे भाई को थाने पहुँचाने के लिए अपने जेवर बेचकर वा और नकदी लेकर थाने चढ़ाने जाते जाते बच सकते हैं, यदि रूड़की निवासी सेठी साहिब कचहरी जाते जाते अपने सगे भाई पर केस करने से बच सकते हैं, यदि भगता भाई का एक नौजवान अपनी बूढ़ी और असहाय, भूखी, प्यासी और रोगी मां को कमरे में मरने के लिए बन्द करके आए, वापिस जाकर अपनी मां को मरने से बचा सकते हैं, तो शत प्रतिशत प्रमोद महाजन भी बच सकते थे, शर्त यह है कि यदि वह नियम पूरा हो जाता, जो उक्त सूरतों में पूरा हुआ है।

ऐसा वह कौन सा विचित्र नियम था जो एक फौजी नौजवान के जीवन में पूरा हुआ, जिससे अपने पिता को मारने के लिए घात में रहता था, उसने अचानक अपना गोलीयां से भरा हुआ रिवालवर कुएं में फैंक दिया।

कोई विश्वास करे न करे परन्तु यह शत प्रतिशत हकीकत है नेचर के विकास के क्रम में एक महा विचित्र अति अलौकिक, पूर्ण निश्कलंक हस्ती प्रगट हुई हैं जो अध्यात्मिक सूर्य की न्याई दमक दे रही है। उन्हें हम परम पू० भगवान देवात्मा के नाम से पुकारते हैं। भगवान देवात्मा नेचर के विकास क्रम में निराली रोशनी और निराले तेज को लेकर आए हैं। इस निराली ज्योति और तेज द्वारा वह घोर पापी रूहों के एक मात्र तारण हार, बचावन हार और सर्वहितों के दाता और इस प्रकार सब उचित सुखों को प्रदान करने वाले सिद्ध हो रहे हैं।

जब भी किसी पापी, परन्तु किसी अंश अधिकारी हृदय को उनकी निराली, अपने असली रूप को रोशन करने वाली, Self revealing रोशनी की किरन मिल जाती है, तो वह अपने पाप भरे भयानक रूप को देखने के योग्य हो जाता है और उनकी शक्ति पाकर अपने पाप कर्म को बहुत घृणित और महा विनाशकारी देखने लग जाता है, तो वह उसी क्षण अपने पाप भरे इरादे को तरक करने के लिए तत्पर हो जाता है।

महराज गांव का फौजी नौजवान अपने जन्म दाता माता पिता से अपने किसी सुख पर चोट लगने से उन्हें मारने का इरादा करके रिवालवर उठाए फिरता था। उस नौजवान के सौभाग्य कि ऐसे समय में देवात्मा, आत्मिक सूरज के दूत, उस गांव में पहुंचे और वहां प्रचार करने लगे। वह अगले गांव गए तो वह फौजी उनके साथ अगले गांव, फिर और अगले गांव जाता रहा और वह प्रचारकों के उपदेश सुनता रहा। आखिर उसे उसके महा सौभाग्य से देवात्मा की आद्वतीय रोशनी की किरन मिल गई और उनके साथ जाते जाते उन्हें रोशनी की और किरन मिली कि उन्होंने रिवालवर कुएं में फेंक दिया और वह नौजवान वहां पहुंच गया, जहां यह संगत उसे लगातार मिलती रही। आखिर फौजी पुत्र की तलाश में पिता भी वहीं पहुंच गया तो भरी सभा में ज़ोर ज़ोर से रोते हुए वह फौजी पिता के पैरों में गिर गया और पुकार उठा कि, "पिता जी मैं तुम्हारा नालायक पुत्र, मैं तो आपको खत्म करने को फिरता

था। देवात्मा अद्भुत देव सूर्य हैं। उनकी ज्योति और शक्ति पाने का जब भी किसी को अधिकार मिलता है, तो उनके जीवन में चन्द लम्हों में ही उच्च वा आश्चर्य जनक क्रान्ति पैदा हो जाती है, जैसे उक्त उदाहरणों में आई।

प्रमोद महाजन अवश्य ही बच सकते थे यदि किसी प्रकार उनके कातिल भाई को, इस अद्भुत धर्म सूर्य की रोशनी में सांस लेने का अवसर प्राप्त हो जाता। प्रत्येक कातिल दिल से कसाई नहीं होता, जल्लाद नहीं होता। उसके सुखों पर चोट लगने से वह घृणा गुस्से वा बदले की भावना से भटक जाता है। उसके भीतर अच्छी हृदय शक्तियां भी होती हैं, जो इस बौखलाहट के अन्दर दब जाती हैं। देवात्मा धर्म के अनोखे सूर्य की किरने अमृत का काम करती हैं, वह बौख़लाहट वा पागल हुए हृदयों को ठण्डा कर देती हैं, उनका ध्यान अपने पापी रूप की तरफ फेर देती हैं। ऐसा अद्भुत नियम पूरा होने से मनुष्य झट अपने पाप कर्म से मुंह फेर लेता है।

महाजन परिवार कोई खानदानी कसाईयों जल्लादों वा कातिलों का परिवार नहीं था। वह साधारण नेक और शरीफ परिवार है। इसलिए ऐसे परिवार के जन को बहुत ही सम्भव था कि यदि देवात्मा की रोशनी मिल जाती तो उसका ध्यान अपनी तरफ अवश्य जाता कि मैं क्या कर रहा हूँ। इसका क्या परिणाम होगा? भाई के अच्छे पक्ष, सेवा और सहायता, मेहरबानियां, बचपन का प्यार, उसे इस रोशनी में दिखाई देता, उसे यह भी अनुभव होता कि भाई की पत्नी और बच्चे तो निर्दोष है। अपना महा नीच और घृणित ख्याल, सोच और मन्सूबा, उस रोशनी में अति भयानक और महा विनाशकारी और तबाही लाने वाला दिखना सम्भव था। इस रोशनी की झलक में उन्हें अपना महा अनर्थकारी कर्म भयानक विनाशकारी नज़र आता। ऐसा दिखाई देने पर प्रवीन महाजन के हृदय का गेयर ही बदल जाता। इस रोशनी से उसके हाथ से रिवालवर फेंकने का नियम पूरा हो जाना था, रोते बिलखते वह अपने बड़े भाई के पैरों पर गिर जाते और पुकार उठते, "भाई, मैं आपका नालायक, महानीच, महा दृष्ट और पिशाच भाई, आपको मारने का मन्सूबा बनाए फिरता था, मुझे क्षमा करो, मुझे क्षमा करो।" यह हृदय जैसे देवात्मा के आद्वतीय देव प्रभावों ने और जनों की ज़िन्दगियों में ऐसी ही परिस्थिती में पैदा किया था, वह प्रवीन महाजन के जीवन में भी पैदा हो जाता। श्री प्रमोद महाजन बाल बाल बच जाते, अन्त में छोटे भाई से बगलगीर हो जाते और घर में नर्क नहीं स्वर्ग पैदा हो जाता।

भारतवासियों को भी अभी इस सचाई का पता नहीं, वह देवात्मा के धर्म सूर्य रूप से पूरे वाकिफ नहीं। वह जिस प्रकार हित के स्त्रोत हैं, उचित सुखों के दाता हैं, सारे पाप कर्मो के नाशक हैं, उनका यह रूप अभी बहुत छुपा हुआ है।

जैसे-जैसे और जनों को यह रोशनी प्राप्त होगी, उनके भीतर निराले परिवर्तन आएंगे, त्यों-त्यों देवात्मा का धर्म-सूर्य, मानव हृदयों के सामने अधिक से अधिक रोशनी होता जाएगा और भारतवासी बड़े नाज के साथ भरकर नाच उठेंगे कि भारत में देवात्मा जैसे अनोखे धर्म सूर्य का उदय हुआ है।

देवात्मा ने ही फरमाया है :-

"मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग चाहता हूँ।"

"मैं पिशाचत्व के समुन्द्र में गर्क हो रही रूहों के लिए मैं जीवन की आशा का एक जहाज हूं।"

सत्य धर्म बोध उत्सव से पहले सत्संग

हर वर्ष की तरह सत्य धर्म बोध उत्सव से पहले सत्संग का आयोजन किया गया। पहले सुन्दर कार्ड छपवाकर उचित स्थानों पर भेजे गए। पंजाबी वा हिन्दी पत्रिकाओं में समय से पहले नोटिस दिए गए।

इस विशेष सत्संग से लाभ उठाने के लिए लोकल जनों के भिन्न खतौली, पदमपुर, पंचकुला आदि स्थानों से कुछ जन पहुंच गए।

सत्संग से पहले 18-डी धर्मशाला में सभा स्थान की सफाई जगदीश जी, पदमपुर से आए एक नौजवान ने की। खाने वा बिछाई आदि का प्रबन्ध किया गया।

3 अगस्त शाम की सभा धर्मशाला सैक्टर 18डी में की गई। इससे पहले 3104, 35-डी में ईतवार की वा अन्य सभाएं होती रही। बाहर से स्वामी धर्मानन्द जी वा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, यमुना नगर से वर्मा जी भी आ गए थे। 20 के करीब हाजरी हो गई थी।

पहले गुरु महाराज जी का अर्चन किया गया, फिर जगदीश जी ने "जीवन ज्योति के तुम सूरज" नामक भजन का गान किया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि मनुष्य बड़ी बड़ी सचाईयों को जानकर भी, उनकी रोशनी में जीवन व्यतीत नहीं करता।

प्रत्येक मनुष्य ने इस दुनियां से चले जाना है, यह एक अटल सचाई है, परन्तु इसे कोई याद नहीं रखता और इसके अनुसार जीवन को नहीं ढालता।

मनुष्य विषय परायण होकर अन्धा वा पागल हो जाता है, इस सच्चाई को उपलब्ध किए बिना, मनुष्य उच्च मुल्यों को लेकर जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। कनल जी को यह सच्चाई दिखाई देती थी कि यदि मैं वकालत करता ही मर गया, तो मेरी अर्थी रोती जाएगी। वह गुरु मिशन पर निस्सार हो गए।

इस सच्चाई को सदा याद रखकर जीना चाहिए। किसी को पता था कि प्रमोद महाजन जी नहीं रहेंगे। हस्पताल गए चहल साहिब जिन्दा वापिस नहीं आएंगे और कई उदाहरण दिए। मनुष्य जीवन की असारता को बताने का यतन किया गया और चार बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त की गई।

4 तारीख की सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में हाज़रीन का ध्यान मिथ्या विश्वासों की ओर फेरा गया। मिथ्या साधन व सच्चे साधन में क्या अन्तर है। देव धर्म के अनुसार सच्चे धर्म साधन और इस विषय में देवात्मा की व्याकुलता के विषय में बताया गया। साधन न करना गुरु का अपमान करना है। गुरु को घोर दुख देना है। उनके सीने में खंजर घोपना है। हम सब साधन न करके, अपने भले का कोई संग्राम न करके गुरु के सीने में खंजर मारते हैं। यदि हम अपने भले का संग्राम करते हैं, तो गुरु को कुछ राहत मिलती है, यदि नहीं होता तो हित अनुरागी देवात्मा की तड़प का हम पापी और कठोर आत्मा क्या अनुमान कर सकते हैं। यदि साधन सच्चा होगा तो हमारा नीच जीवन घटेगा। साधन से उच्च रस की प्राप्ति होगी। साधन का समय बढ़ता जाएगा, पाठ

बढ़ेगा, सेवा, संग्राम, त्याग बढ़ेगा, नहीं तो साधन भी घटता जाएगा। हाजरीन को निज का साधन करने की पुरज़ोर अपील की।

शाम को 6.30 बजे फिर सभा की गई, जो सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई, इसमें बताया गया कि चतुर सयाना होकर भी मनुष्य को पता नहीं लगता कि जिन्दगी में क्या करना है, इसके जानने की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होती, मनुष्य को यह पता नहीं लगता कि मुझे ज़मीन खरीदनी चाहिए कि नहीं, कितना धन कमाना चाहिए, शादी करनी चाहिए कि नहीं, मनुष्य को अपने जीवन लक्ष्य का पता कैसे हो सकता है? यदि दिमाग से पता भी लग जाए कि मनुष्य का ठीक लक्ष्य यह है, तो भी उसकी प्राप्ति नहीं कर सकता। प्रत्येक मनुष्य अर्थात हम सब नीच लक्ष्यधारी हैं। नीच सुखों की प्राप्ति नीच लक्ष्य है।

स्वास्तित्व यज्ञ के दिनों में समय रहते रहते होश पाने की आवश्यकता है। जागने की आवश्यकता है। उच्च लक्ष्य अपनाने की आवश्यकता है। यह सब लगातार देव प्रभावों के मण्डल में रहकर ही अधिकारी जनों के लिए सम्भव है। समय रहते रहते सम्भलने की आवश्यकता है। नीच लक्ष्य को बदलने की आवश्यकता है।

5 अगस्त 2006 की सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें हाजरी 30 - 35 के लगभग थी। इसमें पदमपुर, गजसिंहपुर से 13 जनों की पार्टी पहुंच गई। पंचकूला से सुभाष जी और सुशील जी भी पहुंच गए। पहले 2 भजनों का गान किया गया, फिर गुरु महाराज की छवि का अर्चन किया गया। सभा के आरम्भ में ही सभापति जी ने पूछा कि देव धर्म और दूसरे धर्मो में क्या अन्तर है? बहुत से जनों ने भिन्न - भिन्न उत्तर दिए और यह बताया कि देव ध र्म दूसरे धर्मों से पूर्णता भिन्न है।

फिर सभापति जी ने बताया कि देव धर्म मनुष्य के हृदय, उसके अत:करण उसके स्वभाव, उसके नीच, दुष्ट, रोगी, पापी जीवन को रोशन करने का मुख्य काम करता है, जो संसार का कोई धर्म नहीं करता और न कर सकता है।

मनुष्य का अपने आप अपनी ओर ध्यान नहीं जाता। वह अपने रोगी और नीच जीवन को खराब नहीं देख सकता। देव धर्म में इस कमी को पूरा करने की समर्थ्य है और ऐसा कारज कर रहा है।

देव धर्म के बानी कोई साधारण मनुष्य या साधु सन्त या पीर नहीं थे। वह देवत्व के वा सत्य और शुभ के अनोखे सूर्य थे। उनके अद्‌भुत कड़े तप के कारण निराली ज्योति वा निराले तेज का प्रकाश हुआ है, जिसके प्रकाश में मनुष्य आत्मा अन्दर से रोशन हो जाते हैं और भला परिवर्तन लाभ करते हैं। देवात्मा सत्गुरु का आद्वतीय रोशनी और तेज का वातावरण अति अलौकिक, महा विचित्र और दुर्लभ है। इसके बिना मनुष्य मात्र अन्धा है और पिशाच बने रहने के लिए सदियों से मजबूर है।

सभापति जी ने आत्मा को रोशन करने वाले प्रभावों द्वारा मनुष्य जीवनों में आए परिवर्तनों के सच्चे क्रिश्में पेश करते हुए देवात्मा की अति महान महिमा का गान किया। यह सभा 11 बजे तक जारी रही। सब हाजरीन मन्त्र मुग्ध होकर सुनते रहे देव प्रभावों के मण्डल में अपने भीतर देखने के लिए बेबस होते रहे और धन्य धन्य होते रहे।

सत्य धर्म बोध उत्सव

प्रवेश सभा 5.30 बजे, भजन के गान के बाद, परम पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि का अर्चन किया गया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यह प्रवेश सभा करवाई। उन्होंने बताया कि नेचर में कितने अस्तित्व हैं, जिनमें कुछ ही अस्तित्व सफल होते हैं। यह क्षेत्र देवात्मा का है, उनकी रोशनी और तेज का है। उनके देव प्रभावों का है। यह देव प्रभाव जिस सीमा तक हमें मिलेंगे, उतना ही यह उत्सव हमारे लिए हितकर और लाभ-प्रद हो सकता है। आओ हम मिलकर गूरु महाराज के आगे इन देव प्रभावों की प्रार्थना करें। सभापति जी ने दिल की गहराई से प्रार्थना की। इसके बाद "मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवन" नामक भजन गाया गया। सभापति जी ने अपना ब्यान जारी रखते हुए बताया कि इस उत्सव का नाम "सत्य धर्म बोध उत्सव क्यों रखा गया। सच्चे धर्म का बोध देने के लिए यह उत्सव है। अपने विषय के विचार से भी यह उत्सव निराला है। सत्य धर्म का सम्बन्ध हमारे अस्तित्व वा वजूद से है। इसलिए यह बहुत अवश्यक है कि हम जान सकें कि हम क्या हैं, हमारी भलाई वा तबाही कहां है। ऐसी रोशनी पाने के लिए जो जन यहां पधारे हैं, उनका बड़ा सौभाग्य है। आपका आना सार्थक हो, हम आपका दिल की तह से स्वागत करते हैं, मुबारकबाद देते हैं।

हमारा अस्तित्व क्या है? इसमें हमारा शरीर वा आत्मा सम्मलित हैं। इस विश्व में दो ही चीजें मुख्य हैं जड़ और शक्ति। इस पृथ्वी पर जितने भी जिन्दा अस्तित्व हैं उनमें दो ही मुख्य चीजें है, शरीर और आत्मा। शरीर के अंग इसको बनावट देते हैं, परन्तु आत्मा भी गठनधारी वजूद है। आत्मा के कौन कौन से अंग हैं, इस विषय में सुन्दर देवबाणी का पाठ किया गया। अपने विषय में जानने की इच्छा का न होना, इससे बढ़कर कृपा-पात्र अवस्था क्या हो सकती है। प्रमोद महाजन, नेपाल नरेश के दुखांत वर्णन किए गए। पटना के बूढ़े प्रोफेसर के अपनी ही नौजवान लड़की के सम्बन्ध में नजायज़ यौन सम्बन्धों के बारे और इससे जो publicity हुई उसका मुंह काला करने के विषय में, पी. जी. आई के एक विभाग के मुख्य की भयानक करतूत का वर्णन किया गया। ऐसे भयानक भावों को जानने की आवश्यकता है। हमें अपने परिचालक भावों का ज्ञान पाने की बेहद अवश्यकता है, जो हमारे आत्मा की गठन के अंग है। देवात्मा के प्रभाव हमारे आत्मा की M.I.R. करते हैं, तो पता लगता है कि हम क्या हैं? हम अन्धे और पागल हैं। खराब भाव धारी हैं। यह सब यदि दिखाई देता है, तो होश आती है। हमारे आत्मा के भीतर गन्दगी के ढेर हैं, अच्छापन बहुत कम है। हम क्या हैं, हमारी औकात क्या है? यह देखने के लिए यह उत्सव है। जीवन सम्बन्धी हम बेहोश हैं। मौत किनारे पहुंचकर भी, बार बार मना करने पर भी, बदपरहेज़ी करने से नहीं हटते। बदपरहेज़ी करके जीवन से ही हाथ धो बैठते हैं। आत्मा के सम्बन्ध में बेहोशी की तो इन्ताह है। देवात्मा ने इसलिए निराला दरबार खोला है कि हम अपने

आपको जान सकें। जिस बात ने प्रवीन महाजन को भाई का कातिल बना दिया, उसको जानकर उन भावों से बचने की अवश्यकता है। नीच अनुरागों से मुक्त होने की अवश्यकता है। जो भाव हमारा नाश करते हैं, उनसे मोक्ष पाना हमारा लक्ष्य है। गुरु महाराज ने सत्य मोक्ष देने का, उच्च विकास करने का काम किया है।

डाक्टर श्रीराम जी का परिवर्तन पेश किया गया, सभापति जी ने अपना राक्षसी रूप पेश करते कहा कि राक्षस को श्रीमान जी बना दिया। अपना आप देखने के लिए हम देवात्मा की रोशनी के मोहताज हैं। देवात्मा के प्रभाव पाने के लिए, सभाओं से लाभ उठाने के लिए उच्च नियमों के पूरा करने की अवश्यकता है।

अगले दिन का प्रोग्राम बताया गया और इसको साथ ही मन्त्री जी ने सबका स्वागत किया। जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त की गई।

6.8.2006 सुबह 8.30 बजे

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय :- आत्म अबोधता की हानियां और आत्मा बोध के लाभ

भजन :- मुझको मेरा बोध कराओ।

उसके बाद सभापति जी ने बताया कि डाक्टर राधा कृष्ण जी भारत की माननीय हस्ती थी। विदेश में भी उनका बहुत सन्मान था। रूस के अम्बेस्डर ने जब उनसे पूछा कि दुनियां की समस्या क्या है? इसका हल क्या है। डाक्टर साहिब ने उत्तर दिया कि दुनियां की समस्या है कि "मैं हूँ" इसका हल है कि "मैं भी हूँ और भी हैं।" मनुष्य के जीवन की समस्याएं कुछ अक्ल से समझ आ जाती हैं, परन्तु पेश नहीं जाती। सब मनुष्यों की एक ही समस्या है, नीच सुख अनुराग।

श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी ने एक बार थराजवाला में सभा करवाई कि बंदर सांप को देखकर चौकस हो जाता है और वह उसे गर्दन से कस कर पकड़कर पक्के फर्श पर घिसाता है, ठीक ड्राईवर के बिना गाड़ी का ऐक्सीडैन्ट हो जाता है। अनेक मौतें हो जाती है, चोंटे लग जाती है, अंग कट जाते है। बहुत दुख और सन्ताप मिलता है। एक ही समस्या है कि हमारे नीच अनुरागों ने हमारे गले पकड़े हुए हैं। और बन्दर की तरह घिसा रहे हैं। इस समस्या को यदि सारे धर्म मत जान ले तो सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। अपने सारे भावों का ज्ञान हो जाए, उनके द्वारा जितनी हानि होती है, वह समझ आ जाये, तो आत्मा को होश आ सकता है। नीच सुख अनुराग मनुष्यों को भूतना बन देते हैं। "Think the adultry and adultry is Committed" Jesus Christ ने यह कहा था। चिन्ताएं, कामनाएं निगाहें जब तक पाक न हों, तब तक काम वासना के भूतने से मुक्ति नहीं मिलती। फाज़िलका में एक सभा हुई। एक जन को अपनी काम वासना बहुत भयानक नज़र आई, परन्तु वह कहने लगा मैं तो फलां समाज का प्रैज़ीडैंट हूँ, मैं क्या करूँ, सभा में नहीं आ सकता और वह अपनी उस कमज़ोरी से बच नहीं सका। हमारा धन अनुराग हमारी गर्दन पकड़कर घिसाता है। Medical कालिज में दाखिला मिल सकता था, परन्तु पिता के धन अनुराग ने पैसे नहीं खर्च करने दिए। धन अनुरागी कूड़ा इकटठा करने वाला ही होता है। हमारे सिर घिस जाते हैं, परन्तु धन अनुराग नज़र नहीं आता। अंह अनुराग गल्ती देखने के योग्य नहीं बनने देता। बल्कि अपने आपको सदा ठीक, निर्दोष और सुन्दर रूप में दिखाता है।

यह नीच सुख अनुराग अपने आप नज़र नहीं आते। जो अंह का बोधी नहीं, वह आत्मा का बोधी नहीं। जो स्वार्थ का बोधी नहीं, वह आत्मा का बोधी नहीं, जो घृणा, ईर्षा, घमंड, मान, प्रशंसा को बोधी नहीं, वह आत्मा का बोधी नहीं। जिसने देवात्मा के साथ सम्बन्ध नहीं बनाया, वह आत्मा का बोधी नहीं बन सकता।

आत्म बोध होने से सब दुख और हानियां नष्ट हो जाती हैं। सब उचित सुखों का दर खुल जाता है। उच्च बरकतें प्राप्त होती हैं। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और आत्मिक बरकतें प्राप्त होती हैं। नीच जीवन नष्ट होता है। उच्च जीवन आता है, नई दुनियां खुलती है। आत्मा का ज्ञान और बोध प्राप्त करना आत्मा का लक्ष्य है, इसी से उच्च सुख और बरकतें आती हैं। दुखों और विनाश से रक्षा होती है।

दूसरी सभा 10.30 बजे

विषय : आदेशों का पाठ और व्याख्या।

भजन : "ज्ञानी होना हो जो सम्भव"

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

सभापति जी ने बताया कि हमारी हस्ती में एक शरीर है और एक आत्मा है। पशुओं में ज्ञान देने वाली शक्तियों और योग्यता बहुत थोड़ी वा सीमित हैं।

ज्ञानी वह है जो अपने विषय में, अपने नीच सुख अनुरागों के विषय में वा अपने स्वभाव के विषय में जाने। सबसे कीमती ज्ञान अपनी हस्ती का है, अपने आत्मा का ज्ञान है। इस ज्ञान के लिए भली प्रकार इच्छा महसूस करो। आत्मा की परिभाषा बताई गई कि जो जीवनी शक्ति भौतिक जगत से विकसित होकर पौधों और पशुओं में विकसित होकर मनुष्य की जीवनी शक्ति के रूप में आई है, वह आत्मा है।

शक्ति और जड़ इकटठे ही मिलते हैं। उनका सम्बन्ध अकाट्य है, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

आत्मा का अर्थ है जान। वह अपने रहने के लिए शरीर बनाती है। इसलिए आत्मा मुख्य वस्तु है, यह विश्व का अंश है। हमारा अस्तित्व विश्व के साथ जुड़ा हुआ है।

विश्व क्या है? चारों जगत विश्व हैं। हम इन चारों जगतों से जुड़े हुए हैं। हवा, पानी, खुराक, सूरज, धरती हमें जिन्दा रखते हैं।

मुख्य लक्ष्य क्या है? प्रत्येक नीच गति से मोक्ष और उच्च गति द्वारा अपना विकास करना।

उच्च गति दायक नाना शक्तियों में विकास पाकर ही नीच गतियों से मुक्ति और विकास लाभ कर सकते हैं।

शाम 5.30 बजे

विषय : भगवान देवात्मा के आद्वतीय प्रभावों का आद्वतीय कारज।

सभापति :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,

उच्च परिवर्तन की सुन्दर घटनाएं बताई गई। अजीत सिंह जी ग्रन्थी और उनके परिवार की, जागीर सिंह जी, हरदेव सिंह जी, प्रेम जी के परिवर्तन की घटनाएं बड़े सुन्दर ढंग से पेश की गई। श्रीमती गुप्ता जी सोलन, डा० मुनशा सिंह जी, सरदार सावन सिंह जी, पंडित नेत राम जी, श्री कनल जी सबके सुन्दर परिवर्तन पेश किए गए, जिनको सुनकर हृदय पूजनीय भगवान के चरणों में झुकते रहे।

7.8.2006 :- "धन्य धन्य कहती, तृप्त न होती, जिव्हा मेरी बारम्बार" नामक भजन का गान किया गया। फिर गुरु महाराज की छवि का अर्चन, देव स्त्रोत का गान वा व्याख्या की गई।

दूसरा भजन "हे सत्य सुन्दर व्रत धारी" नामक भजन का गान किया गया। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने "भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन पैदा करने" के विषय पर अपने विचार प्रगट किया।

हाज़रीन से प्रश्न किया कि नीच जीवन क्या होता है। बहुत सारे जनों ने बताया कि फलां फलां कर्म नीच जीवन हैं। सरदार हरनाम सिंह जी का परिवर्तन बताया गया। अपना और अपने भाई का परिवर्तन बताया गया। सम्बन्धों में कैसे नर्क पैदा होता है, कैसे एक एक बेटा अपने बाप पर रिवालवर ताने खड़ा रहता था, उसका रिवालवर छुड़ा दिया।

देवात्मा ने महा नीच जीवन दिखाया है। बंसत लाल जी की घड़िया वापिस करके परिशोध करने की घटना बताई।

एक जेठानी ने किस प्रकार देवरानी के सन्दूक को आग लगा दी, फिर कपड़े सी - सी कर वह सब कुछ वापिस किया, यह घटना बताई। दाता जी और जुल्ली राम जी का बहुत सुन्दर परिवर्तन पेश किया। सारी सभा बहुत प्रभावशाली थी।

9.8.2006 दूसरी सभा 10.3 0 बजे

इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देवात्मा के आद्वतीय कारज के लिए धन और जन की अपील सम्बन्धी ब्यान करते हुए मिशन के प्रति जिम्मेवारी की ओर ध्यान फेरा। अपनी प्रतिज्ञाओं पर पक्के रहकर, सत्संगों वा उत्सवों पर चाव भाव से पहुंचकर अपना नियत दान, अखबार चन्दा देकर हम मिशन के प्रति कुछ जिम्मेदारी निभाते हैं, ऐसा करने की जबरदस्त अपील की इसके परिणाम स्वरूप 14000 रू० लंगर दान और अन्य दान प्राप्त हुआ, उसके बाद भाव प्रकाश की सभा की गई।

भाव प्रकाश

श्रीमान बाली जी :- मैं अपने पहले दान में 1000 रू० और बढ़ाकर दूंगा अर्थात 3000 रू० दूंगा। मैं लम्बे समय से अपनी बिमारी के कारण सत्संग में नहीं आ सका मेरे छोटे दामाद कर्नल साहिब कोई एक वर्ष से हम दोनों पति पत्नी को सम्भाले आ रहे हैं, बहुत ही सेवा करते हैं (रोते हुए) यहां आकर नज़र आया है। मैं घमंड में आकर उनको भी बुरा भला कह देता हूं। उल्टा वह महसूस नहीं करते और भी कितने ही उपकारियों के उपकार नज़र आते हैं। मेरे लिए अलग कमरा वा नौकर रखे हुए हैं। बार - बार महसूस हो रहा है। अपना आप नज़र आ रहा है।

श्री बिपिन कुमार जी सूद :- एक चुराई हुई किताब का परिशोध किया है। भाषा विभाग के डरैक्टर सरदार लाल सिंह जी के गुणों और उपकारों का वर्णन किया।

मोनू जी पदमपुर :- समाज में आने से पहले मैं बहुत नीच था। माता पिता, भाई बहन सब के साथ लड़ता था। वायदे करके मुकर जाता था। झूठ बोलता था। डाक्टर साहिब के मुंह पर भी बुरा भला बोल देता। अब माता पिता की कुछ महानता अनुभव हुई है। सत्संग से और लाभ उठाना चाहता हूँ।

लाला सुरिन्द्र कुमार जी :- तकरीबन 30 वर्ष पहले एक नावल में पढ़ा था, "बहुत दूर की बात है खुदा, देवता या फरिश्ता होना, आदमी के लिए बहुत मुश्किल है इंसान होना। श्रीमान जी की सभाओं से पता लगा है कि इंसान होने वा प्राणी होने में क्या

अन्तर है, किस प्रकार के त्याग वा साधना की अवश्यकता है। यहां आकर नई दुनियां देखने को मिली है। अपना आप देखने का मौका मिल रहा हैं बहुत भला हो रहा है।

श्री बलदेव राज जी मल्लेका :– मैंने एक बहुत बड़ी गलती की है। अपने माता पिता को बहुत दुखी किया है। उनका खाना पीना हराम किया है। अपनी धर्म पत्नी के सम्बन्ध में भी बहुत खराब और बड़ी गल्ती की है। उनको सताया है (बहुत रो रोकर) इसके लिए बेहद शर्मसार हूँ। कई जनों के पैरों पर भी झुके। मैं इस दर से परे नहीं जाऊंगा। उनका ब्यान हृदय स्पर्शी था।

श्रीमान जागीर सिंह जी :– 5 तारीख से सभाएं सुनी हैं। गुरु महाराज के प्रभाव मिलें हैं। मेरा बहुत अन्धेरा दूर हुआ है। मैं माता पिता, भाई और साथी सेविकों का उतना सन्मान नहीं करता। मेरे भीतर "मैं" भरी हुई है। (रो रो कर) मेरा घमंड बड़ों का अपमान करवाता है। मैं अब उपकारियों के दिल नहीं दुखाऊंगा। स्वार्थ के कारण सेवा कम करता हूं। धर्म पत्नी से सेवा लेता हूं, फिर भी ऊंचा बोल जाता हूं, अन्धा हो जाता हूं। मेरा अंह मुझे अन्धा बनाता है। यहां रोशनी मिलती है, नीचता दुखी करती है। मैं सदा प्रभाव हासिल करता रह सकूं। होश में रहूँ। आत्मिक आंखे बन जाएं, नीच जीवन मिटाकर दूसरों की भी कुछ सहायता कर सकूं।

श्रीमान अनिल जी :– मेरा चार पक्षों में हित हुआ है। शरीर, दिमाग, धन और आत्मा का हित हो रहा है।

श्रीमान अजीत सिंह :– शारीरिक तौर पर तकलीफ में होकर भी यह तीन दिन सफल हो गए। बलदेव राज जी के ब्यान को सुनकर दिल बेबस गुरु महाराज के चरणों में झुकता है। इस दर पर दूसरों की हानि करने वाले जन सुधर जाते हैं। मेरी अपनी धर्म पत्नी के सम्बन्ध में नीचता नज़र आई है। उनके सम्बन्ध में गल्तियों का एहसास हो रहा है। गुरु की कृपा से बहुत-बहुत सुधार हुआ है। उजड़ने वाला घर फिर बसने के योग्य हो गया है।

श्रीमती भरपूर कौर जी :– मैं अपने आपको नर्सरी का बच्चा महसूस कर रही हूँ। अपने हिस्से की ज़मीन अपने देवर को खेती करने के लिए दे दी थी। मेरी बेटी की शादी पर मेरी सास जी आई मेरे माता पिता के विषय में काफी कुछ बोले। आखिर मैं प्यार से भर कर उनसे बग़लगीर हो गई। इससे उनको भी ठण्डा कर लिया। मेरे जेठ और जेठानी ने हमारा घर सम्भाल लिया, दिल बहुत दुखी हुआ और मन में ठान लिया कि अब कभी गांव में नहीं जाऊंगी। यहां आकर फैसला किया कि मैं जरूर जाऊंगी और अपनी सास की सेवा भी करूंगी।

श्रीमान सुनील दत्त जी :– इस बार सभाओं से पूरा लाभ नहीं उठाया। दिल दिमाग इधर उधर ही घूमता रहा। इससे दुख भी हुआ। अपनी नीचताएं नज़र आई हैं। गुरु महाराज को धन्यवाद देता नहीं थकता।

श्रीमान सीता राम जी :– सभाएं बहुत ज़ोरदार थी। स्वाद अनुरागी हूं। तली हुई चीज़ें खा जाता हूं। दो दिन लगातार चूरी खाता रहा। घर वाले मना भी करते रहे। अब तली चीज़ें वा घी छोड़ता हूं। पत्नी ने आते हुए कहा कि इस बार क्या छोड़कर आओगे। मैंने कहा कि इस बार तुम्हें छोड़कर आऊंगा। अपने अभद्र व्यवहार पर बहुत शर्म सार हूं।

विपिन जी लिखते है :– बहुत बहुत

सन्मान के योग्य श्रीमान जी, एक बार आपने कहा था कि "मैं जिसके लिए भी सेवाकारी हुआ हूं, उससे बरछे वा तीर खाए हैं" मैंने कहा था कि मैं ऐसा नहीं करूंगा। परन्तु मैंने अपने खतों में Head Priest कह कह कर आप पर तीर चलाए हैं। बहुतों ने मुझे पागल, झल्ला कहकर छोड़ दिया, परन्तु आपने मुझे खतों द्वारा हमदर्दी दिखाई। एक बार आपने मुझे कुछ खत लिखने को कहा, मैंने जबाव दे दिया कि मैं खत लिखने की सेवा नहीं कर सकता, तो आपने कहा, "बताओ और किससे कहूं" मैं चुप हो गया। अब माता पिता सन्तान व्रत के खत मैं लिखूंगा।

श्रीमान जी, आप जैसा कोई और शख्स नहीं देखा, जो कटु वचनों के तीर खाकर उल्ट-पुल्ट न हुआ हो। अपनी निन्दा करने वालों के आप सौ गुण गिणवा सकते हैं, उन पर लेख लिख सकते हो, परन्तु वह बिचारे इतने कृपा-पात्र हैं कि वह आपका एक गुण भी नहीं बता सकते।

श्रीमान जी, आप जैसे व्यक्ति जो तीर खाकर भी मंगल कामना करते हों, कहां मिलेंगे, काश मैं भी ऐसा कर सकूं। गुरु का सेवक रहकर उनका गौरव बढ़ाने वाला बनूं। आप मेरे पास आने का प्रोग्राम बनाओ, मैं तारीख महीना आपको लिखूंगा।

वीरपाल समराला लिखवती हैं :- मैं क्षमा चाहती हूँ कि मैं ऐकाकारी लेकर नहीं आई। मुझे अपने पर बहुत शर्म महसूस हो रही है। देवगुरु की सेविका होकर उनका बताया बाना क्यों नहीं पहना। सभाएं बहुत बढ़िया और सरल थी। सभाओं में बैठकर यह घाटा महसूस हुआ है कि बच्चों को सही रास्ते पर डालने वाला यही दर है। श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की दिल से धन्यवादी हूं कि इतना संग्राम करके हमारे जैसे भटकते परिवारों को गुरु महाराज की शरण से जोड़ दिया।

अन्त में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने गुरु महाराज का विशेष रूप से और सारे प्रबन्ध का, बाकी सारे सेवाकारियों का धन्यवाद किया। देव आरती का गान करके चार बार जय ध्वनि की गई। इस प्रकार कामयाबी से यह उत्सव पूरा हुआ।

(एक हाजरीन)

पाठकों के विचार

एक सेवक लिखवते हैं :-

आपका बहुत-बहुत धंन्यवाद, जो चन्दे के विषय में आपने सुचेत किया। मैं किसी के हाथ 500 रू० भेज रहा हूं। इस पत्रिका को जारी रखें। श्रद्धेय काका जी और शीला बहन जी के विषय में जो लेख थे बहुत अच्छे थे (जुलाई अंक)

एक और सेविका लिखती हैं :-

सेवक यज्ञ के दिनों में आपको विशेष शुभ चिन्तकों में याद करके आपके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करती हूं। दोनों पत्रिकाएं मिल रही हैं, उनमें विशेष लेख होते हैं। आपका संग्राम अति सराहनिय है। यही प्रार्थना है कि इसी दर पर पड़ी रहूं और हानि से बची रहूं।

गम्भीर होती शोर प्रदूषण की समस्या

सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार फिर अपने उस निर्णय की तसदीक कर दी है जिसके अन्तर्गत कहा गया है कि रात 10 बजे के बाद देश में कहीं भी सार्वजनिक तौर पर लाउड-स्पीकर बजाये जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। माननीय अदालत ने यह पुष्टि उस याचिका के संदर्भ में की है जिसके अन्तर्गत कहा गया था कि एक अवसर विशेष पर इस निर्णय में ढील दी जाए। यह याचिका पर अपना फैसला सुनाते हुए माननीय अदालत के दो न्यायाधीशों पर आधारित खंडपीठ ने स्पष्ट किया है कि इस फैसले को लेकर कोई ढील नहीं दी जा सकती। भौतिक समृद्धि और औद्योगिक उन्नति के मौजूदा दौर में वातावरण में अनेक प्रकार के प्रदूषण बढ़ते जा रहे हैं जिनमें से शोर प्रदूषण भी एक है। भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रदूषणों ने जहां पर्यावरण को प्रदूषित करके, धरती और आकाश के बीच की ओज़ोन परत को भी प्रभावित किया है, वहीं सम्पूर्ण मानव जाति के अतिरिक्त तमाम प्रकार की जीव-प्रजातियों के अस्तित्व को भी संकटग्रस्त कर दिया है। इस संकट के अनेक प्रभाव परिलक्षित भी होने लगे हैं, जबकि नदियां सूखने लगी हैं तथा वर्षा-चक्र और मौसम की प्रवृत्ति में भी बदलाव दिखा है। यह सब वातावरण में निरन्तर बढ़ती गर्मी और गैसों के प्रभाव के कारण हो रहा है। शोर प्रदूषण की ओर आज बेशक किसी का विशेष ध्यान न गया हो, लेकिन यह अन्य किसी भी प्रकार के प्रदूषक से कम संकटकारक नहीं है। भौतिकतावादी सृमद्धि के दौर में मनुष्य ने ऐसी-ऐसी वस्तुएं आविष्कृत कर ली हैं जिनसे उपजने वाले शोर के कारण मनुष्य बहरेपन की ओर बढ़ता जा रहा है। शोर के कारण मनुष्य की श्रवण शक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। लाउडस्पीकरों से उपजने वाले शोर ने तो इस स्थिति को नाजुकता के शिखर पा ला खड़ा किया है।

विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर भारत में आर्थिक समृद्धि का भी तेजी से विस्तार हुआ है और आर्थिक समृद्धि के कारण जन-साधारण में प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। इस कारण विवाह समारोहों अथवा अन्य किसी भी प्रकार के समारोहों के दृष्टिगत, लाउडस्पीकरों का खुलकर प्रयोग होता है। देश में निचले स्तर पर लोकतंत्र होने के कारण जलसे-जलूसों की भरमार रहती है। सामाजिक-धार्मिक समारोहों के अवसर पर भी देश में जलूसों के आयोजन तथा अन्य अनेक तरीकों से विचरण की परस्परा है और ऐसे अवसरों पर भी लाउडस्पीकरों का उपयोग किया जाता है। मैरिज पैलेसों अथवा अन्य ऐसे समारोहों के आयोजन स्थलों पर आधी-आधी रात तक लाउडस्पीकर लगाये जाने से आस-पास के क्षेत्रों के लोगों के नींद तो खराब होती है, उनके स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। इन आयोजनों के अवसर पर मौजूद लोगों के शरीर पर पड़ने वाला प्रभाव तो और भी भीषण हो सकता है। डी. जे. और पॉप संगीत में बजाए जाने वाले वाद्य-यंत्र तो जैसे कानों के पर्दे तक फाड़ देने के लिए काफी होते हैं। इनसे उपजने वाला शोर ऐसे पिघले हुए सीसे जैसा होता है जो मनुष्य के कानों की श्रवण शक्ति को धीरे-धीरे कुन्द करता जा रहा है। इससे नई पीढ़ी धीरे-धीरे बहरेपन की ओर बढ़ती जा

रही है तथा इस पीढ़ी के लोगों के शरीर पर अन्य अनेक प्रकार के प्रभाव भी परिलक्षित होते दिखाई देने लगे हैं। किन्तु न तो युवा पीढ़ी इस संकट के प्रति सचेत हो रही है और न सरकार एवं प्रशासन समाज को इस खतरे के प्रति आगाह कर पा रहे हैं। सामाजिक संस्थाएं भी इस मामले में पूरी तरह उदासीनता वाला रुख अपनाए हुए है और स्थिति धीरे - धीरे अनियंत्रित्र होती जा रही है।

हम समझते हैं कि इस समस्या पर यदि शीघ्र और समय रहते काबू न पाया गया अथवा इस पर अंकुश लगाने हेतु प्रभावी पग न उठाए गए तो स्थिति किसी भी सीमा तक गंभीर हो सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि सभी पक्षों एवं वर्गो की ओर से सामूहिक प्रयास किए जाए। जहां तक सरकार और प्रशासन का संबंध है, उनसे तो कार्यवाई की अपेक्षा है ही, सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं से भी आशा की जानी चाहिए कि वे स्थिति की गंभीरता को देखते हुए समाज में जन - जागृति जैसी मुहिम चलाएं। गैर - सरकारी सामाजिक संस्थाओं से अधिक सक्रियता की आशा की जा सकती है कि वे अपने उपलब्ध साधनों एवं स्त्रोतों से ऐसे अभियान चलाएं कि आम लोगों को इस खतरे की विभीषिका के प्रति अधिकाधिक जागरूक और सचेत किया जा सके।

(अजीत समाचार)

दुश्मन को प्यार करके परास्त करें

संसार में यह दावा कर सकने वाले कम ही लोग मिल पाएंगे कि उनका कोई दुश्मन नहीं है। यदि उनसे कहा जाए कि दुश्मन को प्यार करो तो अटपटा लगेगा। पर यदि कोई व्यक्ति वाकई में ऐसा कर पाए तो वह दुश्मन को ही नहीं जीत सकता, अपने को भी इतना बड़ा इंसान बना सकता है कि दुश्मन उसकी छाया को भी नहीं छू सके। क्या आप दुश्मन का इतना भला कर सकते हैं कि वह आपसे घृणा करना छोड़ दे? क्या आप उसे इतना आर्शीवाद दे सकते हैं कि वह आपको अभिशाप देना बंद कर दे? उसके लिए प्रार्थना कर सकते हैं कि आप उसके काम आएं? यह काम कठिन हैं क्योंकि आप उसे प्यार करेंगे जो आपको परास्त करना चाहता है या आपके अस्तित्व को ही मिटाने की कामना करता है। पर यह दुष्कर नहीं है। हमारी सभ्यता के अस्तित्व के लिए यह जरूरी है। इसे पाने के लिए पहले अपने को समझना होगा क्योंकि निश्चित ही आप खुद से भी उतने ही अनजान होंगे जितने अपने दुश्मन से। कोई आपको पसंद नहीं करता या आपकी आलोचना करता है तो क्यों? कुछ कमी होगी, अतीत में कोई भूल की होगी जैसे कई कारण हो सकते हैं जिन्हें आप नहीं देख पा रहे होंगे। इसलिए सबसे पहले अपने अंदर झांको। जब कोई व्यक्ति यह समझ लेता है तो उसका नजरिया ही बदल जाता है। अपने को समझने के साथ अपने दुश्मन में अच्छाई के गुण खोजिए। आप जिससे घृणा करते हैं उसमें खूबियां ढूढ़ेंगे तो आपकी रचनात्मक शक्ति बढ़ेगी। यदि उसे प्यार करेंगे तो उसे हराने का मौका भी पाएंगे। प्यार सृजनात्मक होता है। यह किसी व्यक्ति की नहीं, बुराई की हार में विश्वास करता है। प्रजातंत्र की भावना तो दुश्मन को प्यार से हराने पर ही टिकी है।

माटिन लूथर किंग

शाकाहारी क्या करें?

लेखक - श्री रामनिवास जी लखोटिया

यह जानकर शाकाहारियों को प्रसन्नता होगी कि अमेरिका, इंग्लैड, जापान आदि देशों में शाकाहारी व्यक्तियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। परन्तु हमारे लिये यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में इसका उल्टा ही हो रहा है। यहाँ शाकाहारियों की भावनाओं पर दूरदर्शन एवं अन्य विज्ञापन के माध्यमों के अतिक्रमण के कारण तथा अंडो के प्रचार-प्रसार और आधुनिक सभ्यता की अंधी होड़ा-होड़ एवं फैशन के परिवेश में हम देख रहे हैं कि शाकाहारी परिवारों के सदस्य भी चाहे चोरी-छिपे ही हो अंडे आदि खाने की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं और कुछ लोग तो मांस तक खाने में भी नहीं हिचकिचाते। किन्तु ज्यादातर तो यह देखा-देखी में या अज्ञानवश ही हो रहा है। ऐसी स्थिति में शाकाहारियों के कुछ अपने कर्त्तव्य बनते हैं कि वे अपने-आपको शाकाहार पर होने वाले अतिक्रमण से न केवल बचायें ही, बल्कि अपने परिवार, मित्र-जन एवं अन्य व्यक्तियों को भी शाकाहारी बने रहने में सहायता प्रदान करें। प्रस्तुत लेख में इसी सम्बन्ध में कुछ मुद्दों पर विचार किया जा रहा है।

होटल के खाने से सावधान :- पंचतारा होटल की सभ्यता हमारे देश में अपना एक विशिष्ट स्थान ले चुकी है। आज के परिवेश में बहुत लोग होटल में गये बिना नहीं रह पाते, परन्तु हम शाकाहारी यदि कुछ बातों का ध्यान रखें तो भूल से होने वाले मांसाहार से बच सकते है। जैसे, सलाद को ही लीजिये। कुछ इस तरह की भी सलाद होती हैं जिसमें अंडे का कुछ भाग सफेद या पीला जिसे 'मेयोनिस' कहते है मिलया जाता है। इसका एकाएक पता नहीं लगता। ऐसी ही अन्य सलादे हैं - रशियन सलाद। जिसे ऊपर से तो अच्छी तरह से शाकाहार का रूप देकर रखा जाता है, परन्तु उसमें अंडा मिश्रित रहता है। 90 प्रतिशत ऐसी चमकनें वाली सलादों में अंडे का प्रयोग होता है, जिसे ऊपर से अच्छी ड्रेसिंग के साथ परोसा जाता है। इसलिये हमें होटल के कर्मचारियों ये इस बात की पूरी तहकीकात करनी चाहिए कि ऐसी सफेद क्रीम की तरह ढकी हुई सलाद में कहीं अंडे का मिश्रण तो नहीं है। पूरी जानकारी एवं तसल्ली कर लेने पर ही उसे ग्रहण करना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो बिना ड्रेसिंग की हुई सलाद ही लेने की कोशिश करनी चाहिये। वही पूर्णत शाकाहारी होती है।

अब आईये सूप को ही लें। अधिकतर होटलों में ज्यादातर सूप में उसे हिलाने या बनाने में हड्डियों का प्रयोग होता है। इसी तरह मांस के तरल पदार्थ का प्रयोग अक्सर सूपों में होता है। यहाँ तक कि शाकाहारी सूप कहलाने वाले टमाटर-सूप एवं विभिन्न प्रकार के कुछ सूपों में भी ऐसा होता है। अत: इस बात की पूरी तरह जानकारी लेनी आवश्यक है कि कहीं सूप में ऐसा पदार्थ मिला हुआ तो नहीं है। अब पेस्ट्री एवं केक को ही लीजिये। प्राय: 99 प्रतिशत केक तो अंडे के मिश्रण से ही बनते हैं। परन्तु बाजार में कुछ ऐसी दुकानों भी हैं जो शुद्ध शाकाहारी केक भी बनाती है। ऐसी दुकानों की जानकारी प्राप्त करके-उनसे हो शाकाहारी केक या 'एगलेस केक' बनवायी जा सकती है। यदि हम

'बर्थडे पार्टी में जायें तो यह आम रिवाज है कि जिसका जन्म-दिवस होता है वह केक खिलाते ही हैं। ऐसे में शाकाहारियों को चाहिये कि वे ऐसी केक नहीं खायें, क्योंकि प्राय: ऐसा केक शाकाहारी नहीं होगा। हमें परिवार के छोटे-छोटे बच्चों को भी इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिये ताकि वे अनभिज्ञता के कारण शाकाहारी से मांसाहारी न बनने पायें।

स्वास्थय और शाकाहार – शाकाहारियों के लिये यह जानना भी जरूरी है कि शाकाहार केवल जीव-दया का ही अंश नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी शाकाहार सर्वोत्तम है। वरना जो मांसाहारी होते हैं वे यह कहकर कि अंडे और मांस में प्रोटीन अधिक है, शाकाहारियों को दिग्भ्रमित करते हैं। यदि 100 ग्राम अंडों से 160 कैलोरी प्राप्त होती है तो उतनी ही मात्रा में मूंगफली से 450 कैलोरी, दाल से 330 कैलोरी तथा मक्खन-निकले दूध तथा पनीर से 350 कैलोरी प्राप्त होती है। इन तथ्यों की जानकारी शाकाहार में रुचि रखने वाले प्राणी के लिये जरूरी है।

अब आइये प्रोटीन के बारे में विचार करें। अकसर मांस एवं अंडे के पक्ष में नवयुवकों को इस बात से भ्रमित किया जाता है कि उनमें प्रोटीन ज्यादा है, जबकि यह बात सरासर गलत साबित हसे चुकी है। जैसे, 100 ग्राम अंडों में 13 प्रतिशत प्रोटीन है, मछली में 22 प्रतिशत है तो पनीर में 24 प्रतिशत और मूंगफली में 31 प्रतिशत प्रोटीन है। यही नहीं, सोयाबीन, सभी प्रकार के नट्स, बीज एवं दूध के पदार्थो में जो सुगमता से पच सकते हैं, अंडे तथा मांस से अधिक अच्छी किस्म का प्रोटीन पाया जाता है। अब कोलस्ट्रोल को ही लीजिये। 100 ग्राम अंडों में लगभग 500 मि. ग्रा कोलस्ट्रोल है, लीवर में 300 मि. ग्रा सूअर की चर्बी में 70 मि. ग्रा, चिकन में 60 मि. ग्रा है, जबकि सब्जी, अन्न, मूंगफली, फलों में इसकी मात्रा शून्य है। स्वास्थ्य-सम्बन्धी इन आंकड़ों होने से हम मांसाहारियों का मुंह बंद कर सकते हैं।

विश्व के महान् शाकाहारी – कई बार शाकाहारी परिवारों के व्यक्ति इसलिये भी मांसाहारी बन जाते हैं कि वे समझते हैं कि वे मांयाहारी होना बुद्धिवादी होने की निशानी है। इसलिये उन्हें यह समझना जरूरी है कि संसार के महान् बुद्धिवादी, विचारक, लेखक तथा वैज्ञानिक शाकाहारी थे। जैसे-लियोनार्दो दविंचि, अरस्तू, प्लेटो, शेक्सपीयर पी. एच. हक्सले, डार्विन, न्यूटन, आइन्सटीन, जार्ज वर्नाल्ड शा, एच. जी. वेल्स, मिसेज एनी वेसेन्ट, सर जूलियन हेक्सले, लियो टॉलस्टाय, शैली, रूसो, एमर्सन, आदि महान् व्यक्ति शुद्ध शाकाहारी थे।

भ्रमक प्रचार का प्रतिरोध – अकसर यह देखने में आ रहा है दूरदर्शन और समाचार-पत्रों के माध्यम से गलत तथ्य हमारे सामने प्रस्तुत किये जाते हैं और अन्डों को शाकाहारी अंडा बोलकर खाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसलिये शाकाहारियों के लिये यह जानना जरूरी है कि संसार का कोई भी अंडा चाहे प्रजन्न के लायक न हो, शाकाहारी नहीं होता। हमें उनके प्रतिरोध में समाचार-पत्रों आदि के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत करना चाहिये। यही नहीं जीव-दया, अंहिसा एवं शाकाहारी संस्थाओं की, स्थानीय, जिले या राज्य की संस्थाओं का सदस्श भी बनना चाहिये और अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनकी मदद भी करनी चाहिये।

भारतीय संस्कृति – भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार शाकाहार रहा है। वेदों के समय से लेकर

भगवान् महावीर और बुद्ध के समय को पार करते हुए महात्मा गाँधी के जीवन और वाणी में बराबर इसकी ही गूंज हमें मिलती है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में शुद्ध शाकाहार का ही वर्णन किया है। इसलिये हमें भारतीय संस्कृति और विश्व की प्रगतिशील संस्कृति को देखते हुए अपने परिवार के बच्चों को यह समझाना चाहिये कि उन्नतिशील संस्कृति का प्रतीक है शाकाहार की बढ़ती हुई प्रवृत्ति।

उत्तम ताकत का प्रतीक – यह भी समझाना होगा कि स्वास्थ्य एवं रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने में भी शाकाहार बेहतर है। हम कुछ उदाहरण शाकाहारी पशुओं के ही लें जैसे हाथी, गैंडा, घोड़ा, ऊँट, गया, बैल आदि। हम देखते है कि ये शाकाहारी पशु भी ताकत में किसी से कम नहीं है। इसी प्रकार से विश्व के जो महान् पहलवान या ताकतवर व्यक्ति या बड़े खिलाड़ी हुए हैं वे भी शुद्ध शाकाहारी हैं या रहे हैं जैसे पी. टी. उषा, कमलेश मेहता, प्राइम, नुरमी रोज, बिल पिकनिंग, रिगलेएबेल आदि।

संवैधानिक कर्त्तव्य – हम में से बहुत कम लोगों को इस बात का पता हैं कि भारतीय संविधान की धारा 51ए (जी) के अनुसार हमारा पुनीत कर्त्तव्य है कि हम पशु पक्षी और जीवों पर दया रखें। केवल शाकाहारी रहने से ही हम अपने संवैधानिक कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकते हैं।

शराब और सिगरेट को रोकना – यह देखने में आता है कि शुद्ध शाकाहारी परिवारों नवयुवक जो मांसाहारी की ओर गये हैं उन्होंने सिर्फ धीरे-धीरे शराब पीना भी शुरू किया और झूठी शान तथा झूठे फैशन या दिखावे में आकर फिर सिगरेट पीनी भी शुरू कर दिया और पुन: दोनों ने प्रोत्साहन दिया अंडे और मांस के भोजन को। इस प्रकार हमारा खान-पान, आचार-विचार, रहन-सहन बिगड़ गया। इसलिये यह जरूरी है कि जिन वस्तुओं से मांसाहार को प्रोत्साहन मिलता है, उन्हें रोका जाय। फिर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बात साबित हो चुकी है कि शराब, सिगरेट और मांस शरीर के लिए अति घातक हैं। इसलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से इसकी रोक जरूरी है और अपने परिवार में खास-तौर पर युवा वर्ग के लिये हमें यह चेष्टा करनी होगी कि शाकाहार के गुणों को उन्हें समझायें, शराब, सिगरेट आदि के घातक प्रभाव के बारे में भी उन्हें जानकारी दें और उन्हें उस ओर जाने से रोकें।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

चमत्कारों का अन्धविश्वास

आज कल चमत्कारों का अजीब प्रचार हो रहा हैं।

ऐसे चमत्कारों के फेर में जनता का पड़ना दुर्भाग्यपूर्ण होता है। जो व्यक्ति जीवन में तर्क एवं सूझबूझ से नहीं चलकर अंधश्रद्धा या अंधविश्वास पर आश्रित होकर चलता है, उसे अततोगत्वा अशांति ही हाथ लगती है।

डॉ. विनोद शास्त्री जी लिखते हैं

देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के दूध पीने, प्रतिमा से आंसू बहने, किसी तालाब के पानी से नेत्ररोग दूर होने जैसी अफवा है समय समय पर फैलती रहती है। हर इंसान किसी अजूबे एवं चमत्कार की तलाश में रहकर बहुत जल्दी किसी बड़ी उपलब्धि को पा लेना चाहता है। पौराणिक एवं धार्मिक कथाओं के चमत्कारपूर्ण संस्कार हमारे मानस में बने रहते हैं और उन्हीं धार्मिक संस्कारों को कुछ लोग अफवाहों के माध्यम से जागकर अंधी आस्था पैदा करने की कोशिश करते हैं। प्रतिमाएं प्रायः पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, अष्टधातु या किसी एक धातु की होती हैं। प्रतिमा कभी सजीव नहीं हो सकती, लेकिन शुभ मुहूर्त में की गई प्राण प्रतिष्ठा के कारण असंख्य लोगों के प्राण उन प्रतिमाओं से जुड़ जाते हैं और कष्टों को दूर करने के लिए उन्हीं का आसरा लिया जाता है। प्रतिमा पूजन हिन्दू धर्म में प्राचीन काल से चला आ रहा है, लेकिन उसमें चमत्कार देखना मानसिक कमजोरी का प्रतीक है।

जल या दूध जैसे तरल पदार्थो को पत्थर या धातु का स्पर्श स्वतः नीचे खीचने जैसा अहसास करवाता है। प्रतिमा दूध पीती हो तो मन्दिर में एक भी बूंद दूध नहीं बहना चाहिए था। वर्षा एवं बाढ़ के कारण जब समुद्र में जल का बड़ा भंडार एक साथ पहुंचता है तो किनारे का पानी मीठा ही रहता है।

देवी प्रतिमाओं द्वारा दूध पीना, समुद्र के पानी का मीठा होना, भैरव-प्रतिमा का शराब पीना जैसे चमत्कार वास्तव में हमारे भ्रम मात्र होते हैं। करीब ग्यारह वर्ष पूर्व श्राद्धपक्ष के समय गणेश जी द्वारा दूध पीने की अफवाह पूरी दुनियां में फैली थी और इस अफवाह को गलत सिद्ध करने के कारण एक पत्रकार को जान भी गंवानी पड़ी थी। उस समय दुगधपान को अफवाह या भ्रम कहने पर कई आस्थावान हिन्दू संगठनों ने इन पंक्तियों के लेखक को भी चुप रहने की सलाह दी थी ताकि हिन्दू देव गणेश की प्रतिष्ठा दुनियां भर में हो सके। देव किसी के द्वारा प्रतिष्ठा बढ़ाने की अपेक्षा नहीं करते वे तो स्वयं प्रतिष्ठित होते हैं। अफवाहों से तो हिन्दू देवी-देवताओं का मजाक बन जाता है दुनियां भर में।

प्रो. यशपाल लिखते हैं-

सरसरी तौर पर देखने पर हमें कोई मूर्ति चम्मच से दूध पीते हुए दिखाई देती है, लेकिन वास्तव में ऐसा होता नहीं है। सरफेस टेंशन (पृष्ठ तनाव) की थ्योरी के तहत दूध या किसी भी तरल पदार्थ में

एक प्रकार का पृष्ठ तनाव धकेलने से वह सारा का सारा उसी तरफ खिसकता चला जाता है। हम देखते हैं कि चम्मच को झुकाने पर दूध की झिल्ली टूटने से लोगों को ऐसा लगता है कि प्रतिमा दूध पी रही है, लेकिन सचमुच ऐसा होता नहीं है। ध्यान से देखने पर हम पाएंगे कि दूध लोगों को बहता हुआ दिखाई नहीं देता और वे मान लेते हैं कि प्रतिमा दूध पी रही है।

मालविका सिंधवी लिखती हैं :-

मुंबई के माहिम समुद्र तट में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने आकर समुद्र का पानी पिया, जो चमत्कारिक रूप से मीठा हो गया था। वैज्ञानिक और म्युनिसिपैल्टी वाले तर्क देते रहे कि सीवेज प्रणाली का पानी यहां मिलने की वजह से ऐसा हुआ है तथा इसका उपयोग घातक है। पर कोई समझने को तैयार नहीं था।

सभी लोग इस चमत्कार के पीछे ईश्वर का हाथ समझ रहे थे। लोग जब भी अपने जीवन में अकारण ही साधारण घटना को बहुत ज्यादा महत्त्व देने लगते हैं तो मैं असहज महसूस करने लगती हूं। हिन्दू, ईसाई और अन्य धर्मो के त्यौहारों में मैं शरीक हुई हूं। मैंने इस बात पर ध्यान दिया है कि जिन्दगी के एक मोड़ पर आकर लोग तथ्यों की विश्लेषण क्षमता खो देते हैं तो तर्को पर मान्यताएं भारी पड़ने लगती हैं। जब लोगों को तकलीफ या किसी बात का कष्ट रहता है तो वे दैवीय चमत्कारों पर विश्वास करने लगते हैं।

वास्तु, रेकी, फेंगशुई, गुरु, मंत्र, सेल्फ हेल्प वाली किताबें या ज्योतिष, मुंबई अपनी दुखती आत्मा को शांत करने के लिए भला किसका सहारा ले रही है।

हर समूह के लोग प्रार्थना करते हुए यही सोचते है कि उनकी दिक्कतें दूर हो जाएंगी। दिल की चोट, कैरियर की अनिश्चितता, नशा, स्वास्थ्य, टूटती शादियां, खराब भाग्य और बीमारियों के कारण लोग प्रार्थना, भजन, जप, फूल अर्पण करते हैं, तावीज और अंगूठियां पहनते हैं, धर्मगुरुओं की अंध श्रद्धा में फंसते है और समुद्र की मीठा जल पीते है। वे सोचते है कि ऐसा करने से उन्हें जादुई ताकत प्राप्त हो जाएगी।

ये घटनाएं यह सवाल अवश्य खड़ा करती है कि लोग आत्मविश्वास और वैज्ञानिक समझ से निरंतर दूर क्यों होते जा रहे हैं। वह भी इस सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में।

लेखिका डीएनए की स्तभकार है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Post